

Established in 1936

The Doon School WEEKLY

"I sketch your world exactly as it goes." -Arthur Foot
January 23, 2021 | Issue No. 2591



कोई किसी के लिए रुकता नहीं

कुछ रचनात्मक कर दिखाने की सलाह

Page 2

सेवा की कुलीनता

सेवा के भाग के विवरण

Page 4

GRIEF

Aryan Baruah reflects on the feeling of grief.

Page 5

सम्पादकीय

केशव तिवारी

वीकली में हिंदी से मेरा पहला परिचय इस घटना के साथ हुआ था— मैं सीडीएच में अपने दोस्त की बगल में बैठा उससे डॉस्को डूडल वाला पन्ना मांग रहा था, परंतु उसने मुझे हिंदी सेक्शन पकड़ा कर इंतजार करने को कहा। तीन पन्नों ने मेरा हिंदी को देखने का नजरिया बदल दिया। हर हफ्ते निकलने वाली इस वीकली में मैं हिंदी अनुभाग को खोजता और जिस दिन वह न मिलता उस दिन असंबली में मेरा चेहरा उतरा हुआ रहता था। कुछ महीनों में ही मुझे दो बातों का ज्ञान हुआ निराशा का चक्र काफी हद तक साप्ताहिक था और दूसरा, हिंदी अनुभाग की कमी महसूस करने वाला मैं अकेला न था।

स्कूल में बिताए अपने पिछले पांच वर्षों की हताशा को एक वर्ष में मिटाना चम्मच से पहाड़ खोजने जैसा है, किंतु जब बात उस डी फॉर्म के नए हिंदी पाठक की आती है तब मन दशरथ मांझी बनने से कतराता नहीं। आने वाला यह वर्ष अपने साथ है वीकली के संपादक मंडल में ही नहीं बल्कि अपनी मानसिकता में भी बदलाव लाया है। चांदबाग का हर निवासी वीकली को एक व्यक्तिपरक एवं अनोखे रूप में परिभाषित कर सकता है, परंतु उन सभी अद्वितीय परिभाषाओं में एक वैयक्तिक विशेषता सदैव बनी रहती है।

वीकली चांदबाग और उससे जुड़े हर अंश का प्रतिबिंब है।

इसी विशेषता को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष हमारा लक्ष्य सभी विचार के चित्रकारों को हिंदी भाषा की तूलिका थामना है। भाषा की सीमाओं से पिंजर बंद परिंदों को हिंदी के पंख लगाए उन्मुक्त गगन में छोड़ना है।

वीकली चांदबाग और उससे जुड़े हर अंश का प्रतिबिंब है

मुझसे पहले अद्वैत और आर्यन लिख भी चुके हैं कि भले ही वीकली को प्रकाशित करने की जिम्मेदारी हमारी है पर इस की धड़कन स्कूल के समाज की आवाज में बसती है। ऐसे में मैं आप सभी से हृदय की गहराइयों से यह निवेदन करता हूँ कि आप लिखें। मेरा यह निवेदन विद्यालय की परंपरागत हिंदी लेखकों के साथ विद्यालय के उन सदस्यों से भी है जो एक नई भाषा के साथ अपने लेखन को आजमाना चाहते हैं, उन लेखकों से जो अपनी कला के प्रदर्शन के साथ-साथ अनोखे प्रयोग करना चाहते हैं और उन लेखकों से जो कलम के माध्यम से आवाज उठाना चाहते हैं। स्कूल समुदाय के अध्यापकों एवं वरिष्ठ लेखकों के समक्ष यह छोटा मुंह बड़ी बात लगती है परंतु मैं आप सभी के लिए यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि

आने वाली अंको में
आप 'डॉस्को डूडल',
'वीक गॉन बाय'
एवं 'पॉइंट-काउंटर
पॉइंट' जैसे स्तंभों
की विशेषताओं से
सज्जित अनुभागों
को अपनी मातृभाषा
में भी देखेंगे

हम सब में एक लेखक है। हम सब में एक गढ़ने वाला है और इस वर्ष वीकली का लक्ष्य हम सबको अपनी बात रखने का माध्यम देना है।

इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए इस वर्ष वीकली अपने हिंदी पाठकों के लिए अनेक नए और पुराने अनुभागों को हिंदी में प्रकाशित करेगी। आने वाली अंको में आप 'डॉस्को डूडल', 'वीक गॉन बाय' एवं 'पॉइंट-काउंटर पॉइंट' जैसे स्तंभों की विशेषताओं से सज्जित अनुभागों को अपनी मातृभाषा में भी देखेंगे। इसके साथ ही साथ हम हिंदी के नवेले लेखकों को भी एक विशेष अनुभाग में अपनी बात रखने का मौका देंगे। हिंदी भाषा का चेहरा बनने के लिए एवं स्कूल में
(कमराः)

(पृष्ठ 1 का शेष)

हिंदी साहित्य की प्रोन्नति करने के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए वीकली ने अपने पाठकों को प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों और कवियों से भी परिचित कराने का निर्णय किया है। हमारे प्रयास इस धारणा पर आधारित होंगे कि हर प्रकाशन में सबके लिए कुछ और कुछ के लिए सब सदैव छपा हो। ऐसे में आप सभी की सच्ची प्रतिपुष्टि हमारे लिए सबसे बढ़कर होगी।

2021 हमारे समक्ष एक ऐसा वर्ष

लाएगा जिसमें हम सभी सामान्यता की ओर कदम उठाएंगे। यह वर्ष उन कहानियों से अलंकृत किया जाएगा जो राख से उठते फीनिक्स का प्रतीक हों और इस सोच और अपने स्कूल में बिताए जाने वाले अंतिम वर्ष में अनेक समताओं को देखता हूँ। वीकली का हिंदी संपादक होने से मुझे स्कूल के हर अंश को कागज पर उतारने का उत्तरदयित्व मिला है— एक वर्ष से बिछड़े दोस्तों को मिलाने से लेकर अपने माता-पिता को अकेले छोड़ने के दुःख तक, मुख्य भवन की

घंटी की गूँज से लेकर ओल्ड बॉयज के ठहाकों तक, कक्षाओं की ओर ले जाती सूनी सीढ़ियों से लेकर सीडीएच की गुम गई चहल-पहल तक मैं इन सभी को कागज पर उतारना चाहता हूँ।

आशा है कि जब वह चहल-पहल लौटेगी तो उसके साथ आने वाला अगला डी-फॉर्म भी हर हफ्ते हिंदी अनुभाग का इंतजार करेगा।

आपका अपना,
केशव तिवारी

कोई किसी के लिए रुकता नहीं

कृतिन गोयल

मैं इस कथन से पूर्णतः सहमत हूँ — कुछ पाने के लिए कुछ खोना आवश्यक है। बुद्धिमान मनुष्य परिश्रम द्वारा अपने मार्ग का निर्माण कर लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, किन्तु उसे आराम त्यागना पड़ता है। बाकि जन सपनों में महलों का निर्माण करने में ही व्यस्त रह जाते हैं। अपने भले के लिए गलत और सही में अंतर करना आना चाहिए। उदाहरण के लिए प्रस्तुत अभूतपूर्व स्थिति महीनों से चलती आ रही है किन्तु मैंने अष्टिक प्रकार के मनुष्य देखे। एक ओर ऐसे व्यक्ति जो कीमती समय को नष्ट कर वर्तमान स्थिति के लिए नियति को कोस रहे हैं और दूसरी तरफ वे जिन्होंने अपने आप को सज्ज कर इसे एक विलक्षण अवसर माना है। ये लोग दुनिया से आगे निकल अपने समय का उत्तम प्रकार से प्रयोग कर रहे हैं। वे ध्यानपूर्वक विद्या में मग्न हो पढ़ रहे हैं, अन्य नवीन कलाओं को सीख रहे हैं, परिश्रम कर रहे हैं, समाज सेवा कर रहे हैं। ये चतुर लोग इस स्थिति को लाभदायक बना रहे हैं। सीखने वालों के लिए कोई कमी विद्यमान नहीं है और वे सीख भी रहे हैं, परन्तु अपसोस करने वाले, आराम फरमाने वाले तथा आलस्य करने वाले

समाज को ही कोस रहे हैं।

आज सोने वाले कल भी सोएंगें तथा जो अभी दिन रत एक कर मेहनत करेगा, बाद में आरामदायक जीवन के आनंद लूटेगा और दूसरा बाद में ठोकरें खाएगा। यदि तरक्की का अत्यंत मीठा स्वाद चखना है तो आपके जागने का समय आ गया है। इंतजार

कुछ पाने के लिए
कुछ खोना आवश्यक
है

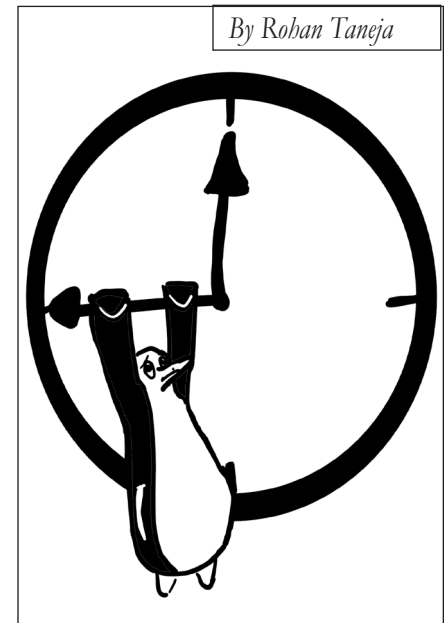
करते रहने से हाथ कुछ नहीं आएगा किन्तु, कड़वा स्वाद चखना पड़ेगा। कोई किसी के लिए रुकता नहीं — न तो समय, न ही लोग। हमारे देश के जो प्रमुख स्तम्भ हैं, वे भी कुछ करके ही इतनी अधिक ऊंचाई पर पहुंच पाए हैं। उन्नति के लिए तब जागकर परिश्रम करना होगा जब सब सोते हों, तब सीखना होगा जब सब आराम करते हों, आराम और परिश्रम के बीच संतुलन बनाकर रखना होगा। यदि एक बार व्यक्ति लक्ष्य को ठान ले और परिश्रम को अपना आधार बनाले तो

कोई भी उसे सफल होने से रोक नहीं सकता चाहे मार्ग में कितनी ही बाधाएं उत्पन्न हो जाएं। आज इस प्रौद्योगिकी के संसार में अवसर अवसर भरपूर है। पीछे रहने के बजाए आगे आना होगा अतीत की गलतियों को सुधारना होगा। यही समय है कुछ रचनात्मक कर दिखलाने का। मैं अपनी बात को एक दोहे से समाप्त करना चाहूंगा

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥

By Rohan Taneja



EXCUSES, EXCUSES

A Note from the Editor:

Dear Reader,

School's shift to the online platform has given rise to some of the greatest excuses ever thought of. The following is a compilation of the best of these excuses. In the future, we will require your help in finding more of these and so, should you come across an excuse you think is particularly brilliant, we request that you email it to us. We hope you enjoy this new section. Happy Reading!

My mom told me to focus on online classes, so she switched off the WiFi.

Shaurya Singh, computer guru.

My sister's rabbit chewed up the wifi cable.

Veer Babycon, pest control.

I took a mental health day.

Sriyash Tantia, can't argue with that.

It is very cold here, so my screen froze.

Rohan Taneja, and so did his brain.

I thought my cursor was a spider so I whacked my screen.

Arjun Prakash, spidey sense.

Sir there was too much traffic. Network traffic.

Krtin Goel, caught in a jam.

I raged at a game and my computer broke.

Aditya Sethi, task anger manager has failed.

My dog ate the computer cord.

Vir Patwalia, ask Veer for advice.

“

When you reach the end of your rope, tie a knot in it and hang on

Franklin D. Roosevelt

This Week in History

1793 C.E.: In the aftermath of the French Revolution, King Louis XVI of France is guillotined on the charge of conspiring with foreign countries for the invasion of France.

1895 C.E.: Hawaii's monarchy ends as Queen Liliuokalani is forced to abdicate.

1924 C.E.: Soviet leader Vladimir Lenin, who led the Bolsheviks to victory over the Czar in the October Revolution of 1917, dies of a brain haemorrhage.

1954 C.E.: The USS Nautilus, the world's first nuclear powered submarine, launches at Groton, Connecticut.

1965 C.E.: Winston Churchill, Britain's wartime Prime Minister, dies.

1966 C.E.: Indira Gandhi is elected Prime Minister of India as the successor of Lal Bahadur Shastri.

1976 C.E.: The Concorde supersonic jet, which cruises at twice the speed of sound, begins passenger service with flights from London to Bahrain and Paris to Rio de Janeiro.

Around the World in 80 Words

Two out of the 3.8 lakh people vaccinated against COVID-19 in India died, while 29 died in Norway after receiving the vaccine. In his final day in office Donald Trump issued 100 pardons, including one for rapper Lil-Wayne. Joe Biden's inauguration saw the tightest Washington security measures in recent history. Footballer Mesut Özil ended his seven year break after being transferred to Süper Lig club Fenerbahçe. India won the Border-Gavaskar Trophy after beating Australia in the final test match.

Doon Doodle

Lockdown Hobbies

Rohan Taneja



सेवा की कुलीनता

अर्जुन मित्रा

‘सेवा की कुलीनता’, ये तीन शब्द हमारे मस्तिष्क में ऐसे छपे हुए हैं, जैसे नोटों पर महात्मा गाँधी जी की तस्वीर। हमारे विद्यालय से जुड़ने के पहले दिन से ही, हमारी पहचान देश के प्रथम और कुलीन विद्यालय से नहीं होती, बल्कि एक सेवापरक विद्यालय से होती हैं, पर रुककर एक बार अपने भूतकाल में झाँककर देखिये कि क्या आपने हर बार सामर्थ्य अनुसार अपने बड़ों और छोटों की सहायता की है?

क्या सेवा से हमारा नुकसान है? क्या हम छोटे हो जाते हैं? दोनों के जवाब ‘ना’ हैं। सेवा आपके द्वारा की गई किसी की सहायता है। यह सेवा आर्थिक, सामाजिक या शिक्षण भी हो सकती है।

अगर हमारा विद्यालय जो बाकी सब तो सिखा सकता है लेकिन सेवा में पिछड़ जाता है तो हमारा चौतरफा शिक्षा का सपना पूरा नहीं होता

क्या हमारा ‘प्रथम आने वाला विद्यालय’ असल में सेवा की विचारधारा पर खरा उतरता है? यह सोचने वाली बात है क्योंकि अगर हमारा विद्यालय जो बाकी सब तो सिखा सकता है लेकिन सेवा में पिछड़ जाता है तो हमारा चौतरफा शिक्षा का सपना पूरा नहीं होता। हमारे विद्यालय में हम सब दूसरों के लिए की जाने वाली सेवा में अब्बल आते होंगे, जैसे शिक्षक छात्रों को शिक्षा प्रदान करने को अपना धर्म समझते हैं। हमें सोचना होगा कि हम अपने विद्यालय से बाहर जाकर दूसरों की कितनी सार्थक सेवा करते हैं या गरीब लोगों को सामाजिक सेवा प्रदान करते हैं?

क्या आपने विद्यालय में हर बार ‘अपनी’ सेवा की है? क्यों हमें हर छोटी सी चीज के लिए किसी और की सहायता लेनी पड़ती है। ऐसा क्यों है कि एक दिन अगर हम बिस्तर ना बनाकर कक्षा के लिए चले जाएँ, तब हमारे घर के सहायकों को वह बनाना पड़ता है?

अपना काम स्वयं करने में कोई तकलीफ नहीं है, सिर्फ हमें मेहनत करनी होती है। खुद का काम करने से हमें नई चीजों का ज्ञान मिलता है और हम आत्मनिर्भर भी बनते हैं।

ऐसा क्यों हो जाता है कि हमें दूसरों से काम करवाना पड़ता है? ज्यादातर इसका उत्तर होगा कि हमारे पास समय नहीं है, पर देखा जाए तो समय किसी के लिए रुकता नहीं। हमें समय को गीली मिट्टी की तरह अपने हिसाब से ढालना पड़ता है। महात्मा गाँधी ने भी अपना काम स्वयं करने पर भरोसा किया था और उनकी किताब ‘सत्य के साथ मेरे प्रयोग’ यह बात कई बार बताती है।

मैं आज आप पर दबाव नहीं डालना चाहता कि आप सेवा को अपना धर्म और कर्तव्य बनाएं, पर इस लेख से मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह विद्यालय हमसे चाहता है कि हमें सेवा-धर्म में शिक्षित होना चाहिए और हमें लेने में नहीं देने में विश्वास रखना चाहिए, तब ही हम ‘सेवा की कुलीनता’ की विचारधारा पर खरे उतर सकते हैं।

यह सब एक दिन में तो होगा नहीं इसलिए हमें छोटे-छोटे कदम लेकर इस विद्यालय को बेहतर बनाना है, और हमें ‘दान को घर से प्रारम्भ करने’ की बात पर अमल करके, अपने आप को सुधारना चाहिए।

आज दोस्तों के बिना

युवराज चोपड़ा

आज दोस्तों के बिना एक अजीब सी कमी महसूस होती है उस कमी को जाहिर करना मुश्किल सा लगता है, जाने क्यों!

घर की चहार-दीवारियों में कैद यूँ तो बस एक साल ही बीता है

अकेलेपन का अनंत बोझ सदियों पुराना लगता है, जाने क्यों!

अतीत की पुरानी बातें, पुरानी यादें, पल-पल उभर कर आती हैं

लगता है जैसे किसी गलती का अहसास कराती हैं, जाने क्यों!

घर छोड़ कर आया था यह सोचकर कि खुद के बल जी लूंगा

लगता है कि मेरा ‘खुद’ ही मुझसे रूठ सा गया है, जाने क्यों!

आज बैठा देखता हूँ कि सबसे खुशहाल समय अजनबी सा है

अपरिचित अजनबी से लगने लगे हैं अपने लोग, जाने क्यों!

कभी तो आँखें मेरी उन खुशियों और यादों से रू-ब-रू होंगी

अब तो दोस्तों के बिना कमी महसूस होती है, जाने क्यों!

एक लेख की यात्रा

यदि आपने अपने मनपसंद विषय का चयन कर लिया हो, तो एक पन्ने पर अपने कुछ महत्वपूर्ण विचार लिखें तथा फिर अपना लेख भी पन्नों पर लें। उसके पश्चात [google.com/inputtools/try/](https://www.google.com/inputtools/try/) या [indiatyping.com](https://www.indiatyping.com) की साइट पर जाकर हिंदी शब्दों को अंग्रेजी में लिखकर हिंदी में परिवर्तित कीजिये। उदाहरण subah - सुबह। आप चाहें तो इनबिल्ट कीबोर्ड का प्रयोग करें। अब आपको यहाँ से आपने जो भी लेख लिखा हो, उसे एक 'ऑनलाइन डॉक्यूमेंट' पर छापना होगा। उसके बाद, एक बार ध्यान से पढ़िए और फिर आप उसके लेख के फॉन्ट को १२ में बदल दीजिये। अब आपका लेख तैयार है, आप उसे 'डॉट डॉक्स', एक 'ऑनलाइन डॉक्यूमेंट' के प्रकार में हिंदी एडिटर को भेज दीजिये।

कोशिश करें कि लेखन का अंदाज आपका खुद का हो जिससे आपके विचार पाठकों के समक्ष अधिक स्पष्टता से पेश आएँ। हम चाहते हैं कि आप कुछ ऐसे लेख

लिखें जो स्कूल की संस्कृति को दर्शाएँ। आपके विचारों में जितनी गहराई एवं अधिक से अधिक तार्किक खूबियाँ होनी चाहिए ताकि वह अपने पाठकों को एक नए तरीके से सोचने पर मजबूर करें और उन्हें कुछ नया सिखाएँ। हिंदी लेखन के शुरुआती चरणों पर स्थित लेखकों से हम निवेदन करते हैं कि वह उन विषयों पर लिखें जो उन्हें स्वयं को रोचक लगते हों।

अपने लेख पर गुणवत्ता न दिखने पर निराश न हों और अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों से सहायता लेकर उससे प्रकाशन के लिए जरूर भेजें। याद रखिए कि हमारा मकसद हिंदी लेखन को प्रोत्साहित करना है और ऐसे में आपके लेख के लिए सदैव वीकली में एक स्थान बना रहेगा।

हम आशा करते हैं कि आपका लेखन का अनुभव सुखद एवं समृद्ध साबित हो!

Grief

Aryan Baruah

Some time ago, I was reading *The Hitchhiker's Guide to the Galaxy* by Douglas Adams – one of the best science fiction books I have ever read. Though I enjoyed every bit of the book, there was one part that has stuck with me.

In this part, a character called Zaphod Beeblebrox is subjected to a machine called the 'Total Perspective Vortex'. The purpose of the machine is to portray the infinity of the universe to clearly convey the relative insignificance of the individual. The severity of the message of one's insignificance could drive the person to insanity.

In a similar manner, in the larger scheme of things, certain events in our own lives show us how our personal feelings are insignificant to the rest of the world. The death of a close relative, for instance, will make you realise that the world goes on, that it does not stop for you no matter how devastating your grief is. Nobody will stop for you or your grief. Somewhere, there is an economy to maintain, a business to run, a child to feed. All of this is of greater importance than your personal sadness, but you do not see this because your vision is obstructed by your own grief.

Grief is a horrible thing because it hits you like a train and shatters even those aspects of your life that you thought were unassailable. Worse still, even

though you know that it is a relentless, unstoppable beast and that it will be hard when it hits you, you can do nothing to stop it.

It is like an invisible weapon, and when that weapon hits you, it hurts much worse than you can imagine. You come to realise that the homework you were worrying about yesterday does not matter, that the TV series which had you hooked yesterday does not matter. The friend who was calling you to inform you of his life's events in a crafted, melodramatic manner does not matter. All that matters is that you feel grief, and although it is invisible to everyone else, it is painfully clear to you.

So, what does one do when one is in such excruciating pain? We tend to gravitate towards people who find themselves in situations similar to our own. After all, it is often better to cry with somebody else than to cry alone. When the clouds clear and you realise that there is nothing you could have done to prevent your grief, you also realise in that moment of truth how unsympathetic the world really is. That is when your insignificance and helplessness really hits you. And thus, another cycle of sadness and (temporary) insanity begins. It is then that we finally see what Zaphod saw during his time inside the 'Total Perspective Vortex'.

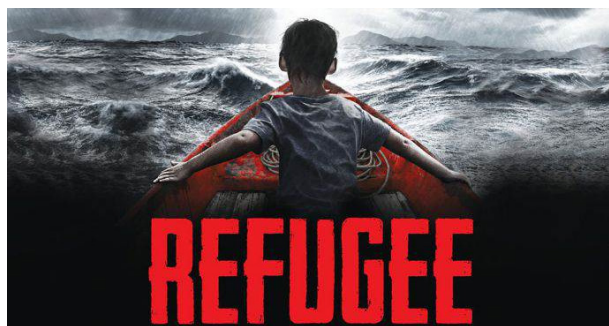
The Problem of The Week

The integers a , b , c , and d are each equal to one of 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, and 9. It is possible that two or more of the integers a , b , c , and d have the same value. The integer P equals the product of a , b , c , and d ; that is, $P = abcd$.

- Determine whether or not P can be a multiple of 216.
- Determine whether or not P can be a multiple of 2000.
- Determine the number of possible different values of P that are divisible by 128 but not by 1024.
- Determine the number of ordered quadruples (a, b, c, d) for which P is 98 less than a multiple of 100.

Source: University of Waterloo

What Have You Been Reading During the Lockdown?



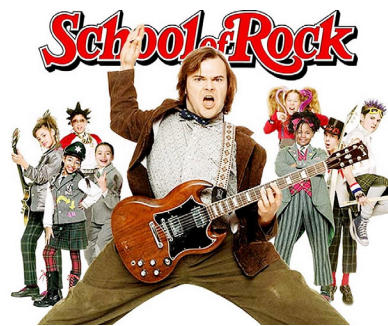
Refugee

Author: Alan Gratz

Have you ever wondered about refugees? How do they leave the comfort of their homes to seek refuge in a place far from home? *Refugee* features three different stories, each taking place in a different era, each about children who are forced to leave their countries due to many factors that directly affect them. It describes the struggles faced by these people, from losing their houses to getting shot at the border. I feel that it truly shows the real side of human nature. It talks about how some humans treat others based on what they believe, what they look like and who they are. It truly is a good read and gives good insight into why people seek refuge.

- Vir Mehta

What Have You Been Watching During the Lockdown?



School of Rock

Cast: Jack Black, Miranda Cosgrove, Joey Gaydos Jr.

School of Rock is a film about an overly enthusiastic guitarist named Dewey Finn who gets thrown out of his band and finds himself in desperate need of work. He finds out about a substitute teaching job through his roommate and fakes his way into the position. Realising that his students at the elite private elementary are gifted, he exposes them to the world of rock and as a part of his plan to seek redemption, he participates in a local competition called "Battle of the Bands". Overall, the film grips its viewers and is extremely funny and as a fan of comedy, I highly recommend this film to everybody.

- Sriyash Tantia

The views expressed in articles printed are their authors' own and do not necessarily reflect those of the Weekly or its editorial policy.

Online Edition: www.doonschool.com/co-curricular/clubs-societies/publications/past-weeklies/ weekly@doonschool.com



©IPSS: All rights reserved. Printed by: The English Book Depot, 15 Rajpur Road, Dehradun, Uttarakhand-248001, India. Published by: Kamal Ahuja, The Doon School, Dehradun.

Editor-in-Chief: Advaita Sood Editor: Aryan Agarwal Senior Editors: Aditya Jain, Kabir Singh Bhai Hindi Editor: Keshav Tiwari Special Correspondents: Ahan Jayakumar, Armaan Rathi, Saatvik Anand, Shreyan Mittal, Vihan Ranka Correspondents: Abhay Jain, Aryan Baruah, Yashovrat Nandan Hindi Correspondents: Arjun Mitra, Krtin Goel Cartoonist: Paras Agrawal, Rohan Taneja Webmaster: Kritika Jugran Assistant Managers: Arvindanabha Shukla, Priyanka Bhattacharya, Purnima Dutta Technical Assistant: KC Maurya